X std   छाया मत छूना

write in class work   गिरिजा कुमार माथुर

1. प्रश्न:- कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर: कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात इसलिए कही है क्योंकि यही सत्य हैं। मनुष्य को आखिरकार अपने वास्तविक सच का सामना करना पड़ता है उसे परिस्थियों में जीना पड़ता है, भूली-बिसरी यादें या भविष्य के सपने उसे दुखी ही करते हैं, किसी मंजिल पर नहीं ले जाते।

2 प्रश्न: 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर: यहाँ छाया 'शब्द अवास्तविकताओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये छायाएँ अतीत की भी हो सकती हैं और भविष्य की भी, ये छायाएँ पुरानी मीठी यादों की भी हो सकती हैं और सपनों की भी।

3 प्रश्न: 'मृगतृष्णा किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर:- गर्मी की चिलचिलाती धूप में दूर सड़क पर पानी की चमक दिखाई देती है। हम वहाँ जाकर देखते हैं तो कुछ नहीं होता। प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इस कविता में इसका अर्थ छलावे और भ्रम के लिए किया गया है।

4 प्रश्न:- 'छाया मत छूना' कविता के कवि ने मानव की किन वृत्तियों को जीवन के लिए दुखदायी माना है?

उत्तर: 1. छाया अर्थात जीती हुई मीठी यादें जिन्हें याद कर करके हम अपने वर्तमान को और अधिक दुखी कर लेते हैं।
2. छाया अर्थात भविष्य के सपने जिनके पूरा न होने पर हम दुखी रहते हैं।
3. वर्तमान जीवन में उचित अवसर पर लाभ का मिलना, वसंत के समय फूल का न खिलना या शरद-रात में चाँद का न खिलना, आशय यह है कि उचित अवसर पर सुख न मिलना।

5. प्रश्न: 'हर पंखुड़ी में छिपी एक रात कृष्णा है' में किस जीवन सत्य का बोध है?

उत्तर: इस पंक्ति का आशय यह है कि हर सुख में एक दुख छिपा रहता है। इसलिए हमें सुख-दुख दोनों को स्वीकार करना चाहिए। हमें सुख पाने के लिए दुख झेलने को भी तैयार रहना चाहिए।

6. प्रश्न: जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति का भावार्थ है मनुष्य यश-मान और सुख-वैभव के पीछे जितना दौड़ता है उतना भटकना है इनमें मन को प्रसन्न करने की शक्ति नहीं है, अतः जो मनुष्य इनके पीछे दौड़ता है वह भ्रम में जीता है।

7. प्रश्न: 'इस वसंत बीत जाने पर फूल खिलने' से कवि का क्या आशय है? 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर प्रस्तुत कथन की तर्क-संगत पुष्टि कीजिए।

उत्तर: इससे आशय है - समय निकल जाने पर सुख का अवसर मिलना। उचित समय पर सुख का न मिलना।

8. प्रश्न: 'छाया मत छूना' कविता में शरद ऋतु और वसंत ऋतु का उदाहरण देकर कवि क्या भाव व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर: इसके माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि यदि ठीक समय पर सुख न मिले तो बहुत दुख होता है।

कक्षा - VI हिन्दी कार्य - पत्रक

पाठ - लोकगीत (भगवतशरण उपाध्याय)

प्रश्नों के उत्तर लिखें एवं याद करें

प्र.1 प्र.(i) निबंध में लोकगीतों में किन पक्षों की चर्चा की गई है? बिन्दुओं के रूप में उन्हें लिखिए।

उ०(i) लेख में लोकगीतों के निम्नलिखित पक्षों की चर्चा की गई है-

- लोकगीतों की विशेषता तथा महत्व
- लोकगीतों में संगीत के विविध उपकरण- ढोलक, झाँझ, करताल और बाँसुरी आदि।
- लोकगीत और शास्त्रीय संगीत
- लोकगीतों के प्रकार
- लोकगीतों में स्त्रियों की सहभागिता
- लोकगीतों को गाने के अवसर
- लोकगीतों की लोकप्रियता
- लोकगीतों में नाच (dance) का पुट।

प्र.२. हमारे यहाँ स्त्रियों के खास गीत कौन-कौन से हैं?

उ०२- हमारे यहाँ स्त्रियों के खास गीत —

(i) नहाते जाते हुए रास्ते के गीत
(ii) त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के गीत
(iii) विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत
(iv) मटकोड़ एवं ज्यौनार (संबंधी के खाना खाते समय) के गीत
(v) संबंधियों के लिए प्रयुक्त गालियों वाले गीत
(vi) जन्म आदि के अवसर पर गाए जाने वाले गीत।

प्र.3. निबंध के आधार पर और अपने अनुभव के आधार पर लोकगीतों की विशेषताएँ लिखें।

उ०3. लोकगीतों में हमारे समाज के जन-जीवन की झलक मिलती है।

इन गीतों में विशेष उत्साह दिखायी देता है
- लोकगीत समूह में गाए जाते हैं
- लोकगीतों में लोकनृत्य की भी भागीदारी होती है।

भाषा की बात

1. 'लोक' शब्द में कुछ जोड़ कर जितने शब्द आप बना सकें, उनकी सूची बनाओ। जैसे लोककला
   - लोक + मंच = लोकमंच
   - लोक + मत = लोकमत
   - लोक + पाल = लोकपाल
   - लोक + तंत्र = लोकतंत्र

2. 'बारहमासा' गीत में साल के बारह महीनों का वर्णन होता है। नीचे विभिन्न अंक से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़ें और अनुमान लगाएँ कि इनका क्या अर्थ है और वह अर्थ क्यों है। इस सूची में तुम अपने मन से सोच कर भी कुछ शब्द जोड़ सकते हैं।

इकतारा, सरपंच, चारपाई, सप्तर्षि, अठन्नी, तिराहा
दोपहर, छमाही, नवरात्र, चौराहा।

वाक्य द्वारा अर्थ स्पष्ट

इकतारा - एक तार वाला वाद्य यंत्र
तिराहा - जहाँ तीन राह (रास्ते) मिलते हैं
सरपंच - पंचों में प्रमुख
दोपहर - दो पहरों का मिलन
चारपाई - चार पायों वाली
छमाही - छह महीनों में होने वाली
सप्तर्षि - सात ऋषियों का समूह
नवरात्र :- नौ रातों का समूह
अठन्नी - आठ आने का समूह (सिक्का)
चौराहा - जहाँ चार राह (रास्ते) मिलते हैं।

X- (हिन्दी) कन्यादान (कविता) (कक्षा कार्य में लिखें)

1. लड़की होना पर लड़की जैसा मत दिखना माँ ने ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर - माँ चाहती है कि उसकी लड़की स्वभाव से सरल, भोली और कोमल बनी रहे, वह दुनियादारी जैसी स्वार्थी, चालाक और ~~झगड़ालू~~ झगड़ालू न बने, परंतु साथ ही वह बेटी को शोषण से भी बचाना चाहती है। वह चाहती है कि उसके ससुराल वाले उसकी सरलता का गलत फायदा न उठाएँ।

2. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी ?

माँ अपना सुख-दुख को अपनी बेटी के साथ बाँटती थी। परंतु अब बेटी ससुराल चली जाएगी तो माँ बिलकुल अकेली रह जाएगी। इसलिए माँ को बेटी अंतिम पूँजी लग रही थी।

3. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी - ?

माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीख दी —

(i) कभी अपनी सुन्दरता और प्रशंसा पर मत रीझना।
(ii) कपड़े, गहनों के लोभ में अपनी आजादी न बेचना।
(iii) घर गृहस्थी के सामान्य कार्य तो करना, किन्तु अत्याचार न सहना।
(iv) लड़की होना पर लड़की जैसा मत दिखाई मत देना।

4. कन्यादान कविता का क्या उद्देश्य है ?

कन्यादान कविता नारी जागृति से संबंधित है। कवि नारी को बेड़ियों से छुटकारा पाने की प्रेरणा देता है। अगर नारी अपनी कमजोरियों के प्रति सतर्क हो जाए तो वह शक्तिशाली बन सकती है।

5. एक कन्या विवाह के पूर्व वैवाहिक जीवन की कैसी कल्पनाएँ करती है ?

हर कन्या विवाह से पूर्व रंगीन सपने देखती है वह सोचती है कि ससुराल में सब उसे प्यार करेंगे, उसके सौन्दर्य पर रीझेंगे वह सुन्दर वस्त्रों और कपड़ों में सजधजकर अपने पति का मन मोह लेगी।

6. माँ ने अपनी बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा ?

माँ ने बेटी को सचेत करना जरूरी इसलिए समझा क्योंकि सभी लड़कियाँ शादी के समय खुशहाली के सपने देखती हैं। परंतु प्राय: सभी सपने झूठे सिद्ध होते हैं। विवाह के समय लड़की भोली भाली होती है। वह केवल रंगीन सपने ही देखती है। उसे दुनियादारी की समझ नहीं होती है।

7. इस कविता में माँ ने जो बेटी को सीख दी है, क्या वह आज के युग के अनुकूल है ?

इस कविता में माँ ने जो बेटी को सीख दी है वह अपने बीते अनुभव के आधार पर दिए है। माँ को पता था कि ससुराल में कुछ लोग नई बहू की सरलता का लाभ उठाकर उसका शोषण करते हैं।

8. इस कविता में कन्या की कौन सी छवि उभर कर आई है ?

इस कविता में कन्या का अबोध होना, विवाह के पूर्व सुखद सपने देखना और अपनी प्रशंसा सुनकर सारी घर गृहस्थी का बोध अपने सिर पर उठाने को तैयार हो जाना।